प्रकाशनार्थ

पटना, 30 **अक्टूबर।** बिहार की जनता को विकास से ज्यादा मान-सम्मान की मांग को हाल ही में राज्य में संपन्न हुए जातिगत सर्वेक्षण से बल मिला है। इस विचार को आज अहमदाबाद विश्वविद्यालय में स्कूल ऑफ आर्ट्स एंड साइंसेज के सहायक प्रोफेसर श्री सार्थक बागची ने 'मेकिंग सेंस आॅफ द कास्ट सर्वे इन बिहार' विषय पर अपने व्याख्यान में बहुत अच्छी तरह से व्यक्त किया। यह कार्यक्रम एशियन डेवलपमेंट रिसर्च इंस्टीच्यूट (आद्री) द्वारा आयोजित किया गया था।

ब्रिटिश राज के दौरान जाति जनगणना का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य लेते हुए उन्होंने राय दी कि रायले नामक अंग्रेज ने जनगणना को पुनर्गठित करके इसे एक राजनीतिक उपकरण बना दिया। जाति-आधारित संगठनों के उदय पर इसका नाटकीय प्रभाव पड़ा। 1931 के बाद जाति जनगणना को निलंबित कर दिया गया क्योंकि अंग्रेज जाति के अति-राजनीतिकरण को रोकना चाहते थे। आजादी के बाद नए शासन ने महसूस किया कि जाति जनगणना एक समतामूलक समाज बनने की दिशा में एक बाधा थी।

श्री बागची ने तब टिप्पणी की कि जाति सर्वेक्षण का उपयोग राज्य और समाज के बीच मध्यस्थता के साधन के रूप में किया जा सकता है। उन्होंने रजनी कोठारी का हवाला देते हुए कहा कि जाति धार्मिक कट्टरवाद के खिलाफ एक कवच है। इस महत्वपूर्ण हस्तक्षेप से विभिन्न राजनीतिक दलों की राजनीतिक लामबंदी और एकीकरण निश्चित रूप से प्रभावित होगा। उदाहरण के लिए निचली जाति की राजनीति ने राज्य की सत्ता पर कब्जा करने का एजेंडा अपनाया है।

प्रसिद्ध नेता श्री शिवानंद तिवारी ने इस तथ्य पर अफसोस जताया कि जाति सर्वेक्षण करने के लिए 1950 के दशक की कालेकर आयोग की सिफारिशों को कभी लागू नहीं किया गया। यदि वास्तव में इसे क्रियान्वित किया गया होता, तो आज समाज बदल गया होता। उन्होंने यह भी महसूस किया कि बिहार में हाल ही में हुए जाति सर्वेक्षण ने देश भर में लहर पैदा कर दी है।

अपने अध्यक्षीय भाषण में बिहार विधान परिषद के पूर्व सदस्य श्री प्रेमकुमार मणि ने कहा कि सम्मानजनक एवं समतामूलक समाज के लिए विकास आवश्यक है। विकास का फल समाज में समान रूप से वितरित होना चाहिए। हमें ऐसे लोकतंत्र का लक्ष्य रखना चाहिए जो जातियों पर नहीं बल्कि समता और सम्मान पर आधारित हो।

प्रारम्भ में, आद्री की सदस्य-सचिव डा. अस्मिता गुप्ता ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने कहा कि बिहार सरकार का एक मुख्य नीतिगत एजेंडा जातियों के इर्द-गिर्द घूमता है, और श्री बागची की बातचीत इस बात पर प्रकाश डालेगी कि हाल ही में संपन्न जाति सर्वेक्षण अंततः बिहार की आबादी को कैसे लाभ पहुंचा सकता है।

कार्यक्रम का संचालन और धन्यवाद ज्ञापन आद्री के डा. दीपक कुमार ने किया। इस अवसर पर व्यक्तिगत और आॅनलाइन उपस्थित प्रमुख लोगों में प्रोफेसर मनोज कुमार झा, श्री नरेंद्र पाठक, श्री प्रणब चौधरी, श्री इम्तियाज अहमद, श्री हबीबुल्लाह अंसारी, डॉ बिनोदानंद झा, श्रीमती नीना श्रीवास्तव और श्री संजय कुमार शामिल थे। इस व्याख्यान में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विद्वानों ने वर्चुअली भी भाग लिया।

(अंजनी कुमार वर्मा)